ओ.आर.सी (गुरूग्राम) 16.07.21

अव्यक्तमूर्त आदरणीय दादी गुलज़ार जी के प्रति प्यारे बाबा का भोग का मधुर संदेश (आदरणीय गीता दीदी जी के द्वारा)

आज जब मैं बाबा के पास वतन में पहुँची तो पहले से ही बहुत से भाई–बहनें वहाँ पहुँचे हुए थे। बाबा मेरे सामने आये, मैंने बाबा को बोला कि बाबा आज ये सभी भाई–बहनें, दादी जी से मिलने आये हैं। सभी ने बहुत–बहुत याद–प्यार दी है। बाबा ने आप सभी को वतन में इमर्ज किया। बहुत सारे भाई–बहनें थे, कोई गुलदस्ता लाया था, कोई हार लाया था, कोई गिफ्ट लाया था, वो सब दादी जी को दे रहे थे। तभी दादी जी भी सामने आ गई, मैंने दादी जी से मुलाकात की, दृष्टि ली। बहुत प्यार भरी दृष्टि दादी जी ने भी दी, बाबा ने भी दी। फिर मैंने बाबा को कहा कि बाबा आज सभी दिल्ली निवासी भाई–बहनों ने विशेष भोग भेजा है, बाबा आप भी स्वीकार करिये और दादी जी को भी स्वीकार कराईये। बाबा ने कहा कि सभी दिल्ली वाले दादी को तो याद करते हैं लेकिन क्या याद करते हैं? मैंने कहा – बाबा, दादी जी की विशेषतायें, गुण, पालना, दृष्टि और बोल ये सब याद करते हैं। बाबा ने दादी जी के बारे में सुनाया कि दादी जितनी न्यारी थी, उतनी ही प्यारी थी।

दादी ने विशेष अपने जीवन में यही लक्ष्य रखा था कि मुझे बाप समान बनना है। दादी ने सदा एक बाप को ही फॉलो किया, किसी अन्य भाई–बहन को नहीं। बाबा को फॉलो करते हुए, तपस्या करते हुए, अपने पुरूषार्थ में तीव्रता लाते हुए दादी ने अपनी स्थिति को बनाया। बाबा ने कहा कि तुम दादी को याद तो करते हो लेकिन ये याद नहीं करते कि जैसे दादी ने अपने जीवन को बनाया और उनके जीवन में जो विशेषतायें थी, वो हम सबको धारण करनी हैं। बाबा ने कहा कि आज तो फूलों का हार ले आये लेकिन सभी बच्चों को कौन–सा हार लाना चाहिए? कौन–सा हार पहनाना चाहिये? बाबा ने कहा कि एक तो दादी के गुणों का हार बनाओ, दूसरा दादी की विशेषताओं का हार बनाओ। याद करो, क्या–क्या विशेषताएं व गुण थे? उनकी माला बनाकर फिर दादी को पहनाओ, वही यादगार बनेंगी।

दादी जितना ही प्रेम स्वरूप थी, उतना ही लॉ का भी बैलेंस था। बाबा के जो भी नियम और मर्यादाएं रही, उन सबको दादी ने अपने जीवन में धारण किया। बाबा ने कहा कि भल दादी से प्यार रखो लेकिन दादी के जो गुण, विशेषतायें, पालना और सेवा रही, उन सब बातों को याद करो। बाबा ने कहा कि बच्चे कहते हैं, बाबा को कैसे फॉलो करें, इतना ऊँचा कैसे बनें, तो बाबा ने कहा कि दादी भी तो आपके

सामने मिसाल है। जब दादी ने फॉलो किया तो क्या आप नहीं कर सकते हो। बाबा ने कहा कि सदा ये ध्यान रखो कि हम भाई–बहनों को फॉलो करते हैं या बाबा को फॉलो करते हैं। बाबा ने कहा कि अगर तुम्हारी नज़र, भाई–बहनों पर जाती है तो उनके गुण और अवगुण दोनों दिखाई देंगें। लेकिन बाबा तो गुणों का सागर है, ज्ञान का सागर है, प्यार का सागर है इसलिए तुमको भी ऐसा मास्टर सागर बनना है। बाबा ने कहा कि एक भी गुण की कमी नहीं होनी चाहिए क्योंकि तुम्हें सर्वगुण सम्पन्न बनना है, ये गायन तुम बच्चों का ही है, बाबा तो गुणों का सागर है। हम सभी दादी को देख रहे थे, दादी दृष्टि दे रही थी। बाबा ने दादी की तीन विशेषतायें सुनाई। एक तो दादी की दृष्टि लेते हैं, दूसरा दादी का बोल सुनते हैं और तीसरी जो दादी की जो मंसा है वो कितनी शुद्ध और शांत है! शांति की देवी भी उसको कह सकते हैं। बाबा ने कहा कि ऐसी शांति की शक्ति अपने में लाओ क्योंकि आज की सारी दुनिया में अशांति ही अशांति है, उस अशांति को खत्म करने की जिम्मेवारी तुम बच्चों के ऊपर है।

तुम जितनी शांत–स्वरूप आत्माएं बनेंगे, उतना ही अनेक आत्माओं को शांति का अनुभव करा सकेंगे, साथ ही उनकी वृत्तियों और मंसा को भी शांत करेंगे। बाबा ने कहा कि तभी बाप की प्रत्यक्षता होगी। प्रत्यक्षता वर्ष मनायेंगे, प्रत्यक्षता करनी है, करनी है, नारा भी लगाते हो परन्तु उस प्रत्यक्षता के लिए पहले स्वयं को प्रत्यक्ष करो कि बाबा ने हमें कैसे बनाया। जैसे आज दादियाँ हमारे सामने हैं तो सोचते हैं वो कैसे बनीं? तो ऐसे ही बनकर तुम बाबा को भी प्रत्यक्ष करोगे और दादियों को भी प्रत्यक्ष करोगे। बाबा ने कहा कि ये सभी कौन हैं? मैंने कहा – बाबा ये सभी दिल्ली निवासी भाई–बहनें हैं, दादी को सब बहुत याद कर रहे हैं। इन्होंने दादी की पालना ली है, दादी की दृष्टि और बोल से कैसे पॉवर मिलती है, सबने उसका अनुभव किया है। दादी जी के द्वारा बापदादा आते थे तो हमें शांति, शक्ति और कई विशेष प्रेरणायें भी मिलती थी। अभी तक हम याद करते हैं कि दादी जी थी तो हम मधुबन जाते थे, सदा यही धुन लगी रहती थी कि बाबा कब आयेंगे।

बाबा ने कहा कि बच्चों को बोलो कि अब जब भी ऐसा ख्याल आये तो वतन में चले आओ। लेकिन जब अव्यक्त स्थिति को धारण करेंगे तब तो अव्यक्त मिलन मनायेंगे। बाबा ने कहा कि सिर्फ बोलने से कुछ नहीं होगा लेकिन करने से होगा। जितना–जितना तुम अव्यक्त स्थिति धारण करेंगे तो जब चाहो, जिस समय चाहो, वतन में आ सकते हो। मैंने दादी जी से पूछा कि दादी जी आप सबके लिए क्या संदेश दे रहे हैं? दादी जी ने कहा कि सभी भाई–बहनों को कहना कि समय बहुत थोड़ा है, अंतिम समय है, अंतिम जन्म है। दादी जी ने कहा कि आज तुम दुनिया

की जो परिस्थितियां देखते हो, उनको देखते हुए भी अपनी स्व–स्थिति पर ध्यान नहीं देते हो। परिस्थितियों का ही वर्णन करते हो, आज ये हो गया, आज ये हो गया। दादी जी ने कहा कि अपनी स्व–स्थिति को देखो, परिस्थिति को देखकर वर्णन करने से उसी सोच में पड़ जाते हो। परिस्थितियाँ तो आयेंगी लेकिन उनको देखते और सुनते हुए अपनी स्व–स्थिति को पॉवरफुल बनाओ। बाबा ने भी कहा कि बच्चों को बहुत बार संदेश भी दिया है कि अब जाने की तैयारी करो, एवररैडी बनो। बाबा ने कहा कि बच्चे अलबेले होने के कारण सुनते हुए भी नहीं सुनते हैं, उस पर ध्यान नहीं देते हैं। इसलिए अभी बच्चों को कहो कि आलस्य और अलबेलेपन का टाइम गया। बाबा ने कहा – अगर अभी तक भी अलबेले और आलस्य के वश होंगे तो तुम एवररैडी नहीं बन सकेंगे। इस तरह बाबा ने और दादी जी ने आप सबके लिए बहुत–बहुत याद–प्यार देकर, मुझे छुट्टी दी।